International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-06-2020; Accepted: 13-07-2020; Published: 28-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 68-69

असाध्य वीणा का मौन स्वर

लोकेन्द्र कुमार
हिन्दी, श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

'असाध्य वीणा' अज्ञेय की कालजयी लम्बी कविता है। इस पर अनेक विद्वान – मनीशी अपने मत व्यक्त कर चुके हैं। फिर भी जब – जब इसे पढ़ा जाता है यह एक नये रूप में हमारे मनः मस्तिश्क पर छा जाती है। 'असाध्य वीणा' का वर्तमान परिपेक्ष्य में सफलता प्राप्ति के सुत्रों के साथ मूल्यांकन किया जाय तो यह आषा की एक किरण के रूप में नज़र आती है। 'यों मेरी वीणा भी मौन हुई'[1] के साथ कविता का समापन होता है। किन्तु उस मौन का स्वर और अनुगूँज आज भी सुनाई दे रही है।

प्रसिद्व लेखक षिवखेड़ा लिखते हैं – '' हम कामयाबी को कैसे देखते हैं यह हमारे नज़रिए से तय होता है। आषावादी सोच वाले आदमी के लिए नज़रिया कामयाबी की सीढ़ी बन सकता है। दूसरी ओर निराषावादी सोच के आदमी के लिए यह रास्ते का रोड़ा बन सकता है। ''[2]

संगीतकार केषकम्बली का दृश्टिकोण भी आषावादी था । उनसे पहले कई सगीतकार असफल प्रयत्न कर चुके थे। किन्तु उन्हें अपनी क्षमताओं पर विष्वास नही था। केषकम्बली आषावादी दृश्टिकोण के साथ वीणा को साधते हैं, उन्हें अपनी क्षमताओं पर पूरा भरोसा था । सकारात्मक दृश्टिकोण के साथ अपनी क्षमताओं का प्रयोग उन्हें लक्ष्य अर्जित करवाता है। किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए मन में विष्वास और सकारात्मक दृश्टिकोण आवष्यक है। यदि केषकम्बली वीणा की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि जानकर नकारात्मक अवधारणा बना लेते तो उनकी सफलता पर संषय उत्पन्न होता है।

नार्मन विन्सेट पील लिखते हैं – '' इन्फीरियॉरिटी कॉम्पलेक्स या हीन भावना आपकी आषाओं की प्राप्ति की राह में बड़ी बाधा है। आात्मविष्वास इस बाधा को हटा देता है। आत्मविष्वास आपको आपकी मंजिल तक पहुँचा देता है और आपको सफलता व उपलबधियाँ हासिल होती है। ''[3]

अज्ञेय का दृश्टिकोण भी आत्मविष्वास उत्पन्न करता है। केषकम्बली को अपनी क्षमता पर पूर्ण भरोसा था । उस भरोसे के बल पर उसने आत्मविष्वास उत्पन्न किया। जब मन आत्मविष्वास से लबरेज हो तो सफलता की सीढ़िया स्वतः फतह होती जाती है।

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बाह्य उपकरणों के साथ स्वयं को षोधना आवष्यक है। उस लक्ष्य के प्रति स्वयं की आत्मिक ऊर्जा को जागृत करना ही स्वयं को षोधना है। यहाँ साधक को स्वयं को भूलकर अपनी चेतन षक्ति को लक्ष्य की चेतना से एकाकार करना होता है। जब दो आत्मिक चेतन षक्त्यिों का मिलन होता है तो ब्रह्माण्ड की चेतन षक्तियों से ऊर्जा प्राप्त कर साधक लक्ष्याभिमुख होता है। केषकम्बली ने भी यही किया –

'' मौन प्रियवंद साध रहा था वीणा नहीं ,
स्वयं अपने को षोध रहा था । ''[4]

इस सम्बन्ध में हरदयाल अपने लेख 'असाध्य वीणा' में लिखते हैं – '' मौन प्रियवंद वीणा को न साधकर 'स्वयं' अपने को षोध रहा था । वह अपने को उस किरीटी – तरु और उसके परिवेष में पूरी तरह लीन हो गया था । उसे सबकुछ स्मरण आ रहा था किंतु वह अपने को भुल गया था। वह सब कुछ सुनता था किंतु अपने से परे षब्द में लीयमान । वह वह नहीं रह गया था, कहीं नहीं रह गया था।''[5]

केषकम्बली में समर्पण भाव था । जब तक 'मैं' का भाव किसी साधक या व्यक्ति के लक्ष्य प्राप्ति में अवरोधक होता है। जब तक 'मैं' की भावना रहेगी तब तक समर्पण भी अधुरा रहेगा। लक्ष्य साधने हेतु स्वयं को षोधना भी आवष्यक है। ईष्वरीय ज्ञान प्राप्त करने हेतु यह 'अहंकार' तिरोहित होना आवष्यक है, अन्यथा लक्ष्य अधूरा रहेगा ।

'' मुझे स्मरण है
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध , विजड़ित करता है मुझ को
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर – कम्पन्न लेता है मुझ को मुझ से सोख
वायु – सा नाद – भरा मैं उड़ जाता हूँ ....
मुझे स्मरण है –
पर मुझको मैं भूल गया हूँ
सुनता हूँ पर में मुझ से परे षब्द में
मैं नहीं नहीं । मैं कहीं नहीं ।
अरे ओ तरु ! ओ वन ''[6]

अहंकार का विगलन से समर्पण का भाव जागृत होता है। अहंकार या 'मैं' का भाव किसी भी साधक या व्यक्ति के लक्ष्य प्राप्ति में अवरोधक होता है। जब तक 'मैं' का भावना रहेगी तब तक समर्पण भी अधूरा रहेगा । लक्ष्य साधने हेतु स्वयं को षोधना भी आवष्यक है। ईष्वरीय ज्ञान प्राप्त करने हेतु यह 'अहंकार' तिरोहित होना आवष्यक है, अन्यथा लक्ष्य अधूरा रहेगा ।

समर्पण के लिए आत्म चेतना जागृत होना आवष्यक है। आत्म चेतना द्वारा साधक साध्य को समझ सकता है। साध्य समझने के उपरांत ही वह अहर्निष विभिन्न प्रयत्न – उपागम करता है। डॉ॰ ष्यामसुन्दर मिश्र चेतना के सम्बन्ध में मत व्यक्त करते हैं कि – '' चेतना का सतत प्रवाह जीवन का मूल आधार हैं। अतः चेतना जीवन का भार वहन करती हुई भी उसके निर्माण परक रूपों में सक्रिय भाग लेती है। व्यक्तिगत रूप में चेतना अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी दोनों होती है। ''[7]

लक्ष्य के साथ तादाम्यीकरण या कहे अनुभूति के साथ तादाम्यीकरण भी आवष्यक है। जब असाध्य वीणा को केषकम्बली ने साध लिया तो उपस्थित सभी जन की अनुभूति समरूप नहीं थी । सभी ने भिन्न ध्वनियों की अनुभूति की , इससे यह सिद्व होता है कि आप अपने लक्ष्य के प्रति कितना समर्पित हो या आपका ध्यान किस दिषा में केन्द्रित है –

'' सब ने अलग – अलग संगीत सुना इसको
वह कृपा वाक्य था प्रभुओं का..... ''[8]

सत्य के साथ डटे रहना । मुष्किल हालात से अवष्य पार लगाता है। यदि साधक संकटकालीन परिस्थितियों में सत्य का साथ नहीं छोड़ता है तो 'साध्य' प्राप्त करने में उसे कठिनाई का सामना ज़रूर करना पड़ता है किन्तु लक्ष्य अर्जित करने का प्रतिषत निष्चित ही बढ़ जाता है। प्रियवंद केषकम्बली ने वीणा को साधने के लिए स्वयं को सत्य को समर्पित किया । सत्य की राह में अनेक बाधाएँ होती है। ईर्श्या, राग, द्वेश इत्यादि ऐसे तत्त्व हैं जो सत्य की राह में अवरोध उत्पन्न करते हैं । केषकम्बली ने इन बुराइयों पर विजय प्राप्त की तभी वे असाध्य वीणा साध सके।
इस सम्बन्ध में डॉ. ज्वालाप्रसाद खेतान ने टिप्पणी की है – '' असाध्यवीणा के माध्यम से कवि अपने भावजगत की कथा कहता है किन्तु उसमें कोई कुंठा, अहंकार, गोपनता कहीं कुछ नहीं दिखाई देता क्योंकि वह इन सब से ऊपर उठ चुका है।''[9]

समग्रतः कहा जा सकता है कि अज्ञेय की यह लम्बी प्रतीकात्मक कविता विपरीत परिस्थितियों में धैर्य, साहस, जीवटता, और समर्पण की प्रेरक है। प्रियवंद केषकम्बली द्वारा वीणा की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि जानने के बाद भी उसे साधने की चुनौति स्वीकार करना उनके साहस को प्रकट करती है। प्रियवंद द्वारा नतमस्तक होकर इश्ट देव की आराधना व मन्त्राभिभूत वीणा को प्रणाम कर मन ही मन आत्म निवेदन करना उनके धैर्य की परिचायक है। असाध्यवीणा को साधने की चुनौति स्वीकार कर उसमें अन्ततः सफल होना उनके दृढ़ आत्मविष्वास की परिचायक है। प्रियवंद केषकम्बली द्वारा स्वयं को षोधना व पूर्ण रूप से वीणा को समर्पित कर देना उनके समर्पण की भावना को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। असाध्सवीणा वास्तव में एक कवि की कविता नहीं है, बल्कि वह निराष – हताष व्यक्ति में आषा और ऊर्जा का संचार करती है। किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी बिना किसी भय के सकारात्मक व आषावादी दृश्टिकोण के साथ सफलता अर्जित की जा सकती है। केषकम्बली द्वारा परिणाम की चिन्ता किए बिना 'कर्म' करना श्रीमद्भगवद्गीता के प्रेरक उद्घोश –

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेशु कदाचन''

का जयघोश करती है। असाध्यवीणा के ब्याज से प्रस्तुत सफलता के छोटे – छोटे सूत्र इसे अमरत्व प्रदान करते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. आंगन के पार द्वार' अज्ञेय, पृ. 87, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1961
2. 'जीत आपकी' षिव खेड़ा, पृ. 5, ब्लूम्सबरी पब्लिकेषन, नई दिल्ली
3. 'सकारात्मक सोच की षक्ति' नॉर्मन विन्सेन्ट पील, पृ.13, मंजुल पब्लिषिंब हाउस, भोपाल
4. 'आंगन के पार द्वार' अज्ञेय, पृ. 77, , भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1961
5. तिवारी, विष्वनाथप्रसाद (सं.), अज्ञेय, पृ. 52, नेषनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1978
6. अज्ञेय, आंगन के पार द्वार, पृ. 82, , भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1961
7. 'अस्तित्ववाद और साहित्य' ष्यामसुन्दर मिश्र,, पृ. 44, पंचषील प्रकाषन, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1983
8. आंगन के पार द्वार' अज्ञेय, पृ. 85, , भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1961
9. 'अज्ञेय एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन' ज्वालाप्रसाद खेतान, पृ. 122, विष्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी, संस्करण, 1990